विनोद कुमार शुक्ल

# हरी घास की छप्पर वाली झोपड़ी और बौना पहाड़!

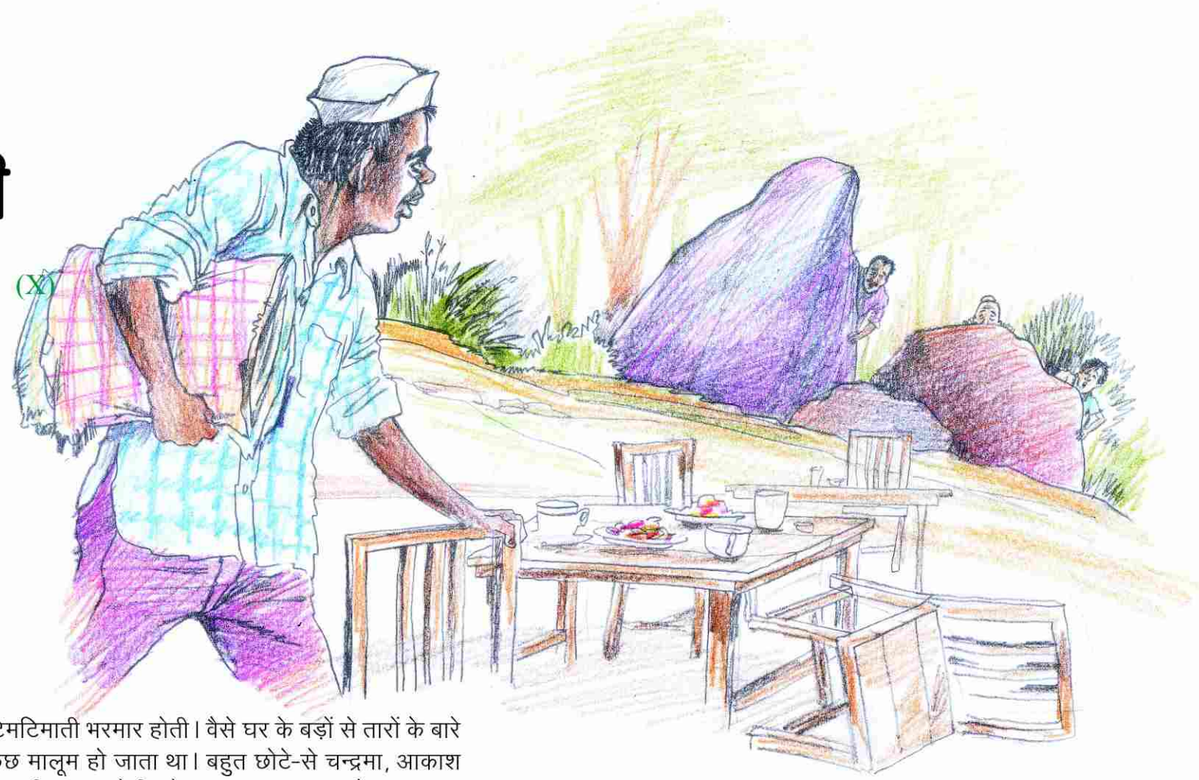

टिमटिमाती भरमार होती। वैसे घर के बड़ों से तारों के बारे में कुछ मालूम हो जाता था। बहुत छोटे-से चन्द्रमा, आकाश की पहली समझ होती जो सुन्दर, चमकदार और बड़ा था। आसानी से दिखता था। उसका स्वरूप दिनों के हिसाब से बदल जाता था। आकाश में उसके दिखने और इधर-उधर दिखाई देने के निश्चित कारण थे। घर में इन सब की जानकारी परम्परा से थी। बाहर खटिया में लेटे-लेटे छोटे-छोटे बादलों में चन्द्रमा के छुपने और निकलने को देखना अच्छा खेल था। आकाश से बड़ा कोई परदा नहीं था। जिसमें तरह-तरह के खेल होते। यह एक विशाल दूरदर्शन था। इससे बड़ा कोई रहस्य भी नहीं था जिसके सुलझने का अनुपात इतना कम था कि वह शून्य के पास ही रहता। इसमें बच्चों के लिए अनगिनत खेल थे। ये खेल प्रश्नों के और कौतूहल के होते। रात को आँगन में नींद खुलती तो चन्द्रमा को ढूँढते। कभी चन्द्रमा मिल जाता तब नींद आती। कभी चन्द्रमा के मिलने के पहले नींद आ जाती। चन्द्रमा और तारे जगह बदल देते थे। सप्तऋषि भी। परन्तु ध्रुव वहीं होता, उत्तर दिशा के खीले में टँगा हुआ तमगा, हर उस के लिए जो अपनी दिशा से नहीं भटकते हैं। पूरे संसार का यातायत पुलिस वाला जैसा। जो जिस दिशा में जाना चाहे उस दिशा का रास्ता बताता हुआ। धरती और समुद्र में भटके हुए लोगों को राह पर लाने वाला।

गुरूजी को यह अनुमान होने लगा था कि बच्चे स्कूल में अपने साथ घर वालों गाय, कुत्ते, बिल्ली तक को लाने को इच्छुक हैं। माँ, पिता, बाबा, अजिया, नाना, नानी, को भी। एक छोटी बस्ती अपने घरों से निकल कर अपने बच्चों के अलग-अलग समूहों में बच्चे गाने में बातचीत कर रहे थे,

"छुट्टी के दिन नया खेल सोचें
जंगल के चींटे को अपना मित्र बनाएँ
अपने घर का पता बताएँ, जब वह आए गुड़ की भेली पर बैठाएँ।"

"एक खेल कुछ ऐसा खेलें, जो हो सबसे पहला खेल। दूसरा खेल कुछ ऐसा खेलें, जो हो सबसे पहला खेल। इसी तरह अनगिन खेलों की गिनती लगाएँ। फिर आखिरी खेल कुछ ऐसा खेलें जो कभी खतम न होता हो।"

"जितने तारे उतने खेल। रात होती तो क्यों होती देर। चलो खेलें दिन-रात। होती न हो जिसमें देर और बीते रात। छुट्टी के दिन की, हो सुबह तत्काल।"

एक लड़की ने तब चिल्लाकर कहा –

"मैं खेलूँगी एक खेल अनोखा
जिसमें सब का साथ होगा चोखा।
मैं चलूँगी आगे-आगे
तुम सब पीछे।
मैं पहुँचूँगी आगे
सब पहुँचेंगे पीछे।
मैं खेलूँगी सबको पहुँचाने का खेल,
एक टेढ़ी-मेढ़ी पगडण्डी पर चलकर।
जंगल में धँसने का खेल होगा।
आगे वाले को आगे खतरा, और
पीछे वालों को सुरक्षित
आगे ले जाने का ज़िम्मा होगा।"

दिन में स्कूल की पढ़ाई होती। रात के समय को स्कूल की पढ़ाई से अलग कर दिया था। रात में अँधेरा होता है। रात में कुछ स्पष्ट दिखाई नहीं देता। इसलिए अस्पष्ट का डर होता। रात का समय घर लौट आने का समय था। आदिम मनुष्य को रात होने से आश्रय और सुरक्षा के लिए घर की ज़रूरत जल्दी हुई होगा। अगर केवल दिन ही दिन होता तो यह ज़रूरत बहुत बाद में होती। बिजली की आवश्यकता भी जल्दी नहीं होती।

गरमी के दिनों में रात में जब घर से बाहर खटिया डालकर सोते तब साफ खुले आकाश में तारों की



स्कूल में छुट्टी का दिन बिताने नहीं, छुट्टी के दिन की उनकी पढ़ाई में शामिल होने आ रही है। खामोश ढम ढमाढम ढम एक अघोषित घोषणा जैसी। परन्तु लड़कों के उत्साह में हल्ला था। और इतना हल्ला था कि पक्षियों, कीड़ों, जंगल के जानवरों यहाँ तक कि बजरंग महराज को भी मालूम था। बजरंग महराज को भैरा से मालूम हुआ था। भैरा रोज़ अँधेरा होने के पहले होटल लौट आता था। स्कूल में रात को रहने के लिए उसे बजरंग महराज से अनुमति लेनी थी।

मास्टर जी के साथ यह तय हुआ कि छुट्टी का दिन बिताने की पढ़ाई के लिए मंगलवार का दिन ठीक रहेगा। क्योंकि मंगलवार को छुट्टी नहीं थी। सोमवार की रात सब स्कूल में रहना चाहते थे। और सोमवार पूर्णिमा का दिन था। गोल स्कूल और लम्बे स्कूल में एक-एक टिमटिमाता बल्ब रात को जलता था। जो धूल और पुताई के छींटों के कारण और धुँधला हो गया था। आज शुक्रवार का दिन था। आज के ही दिन से मास्टर जी ने सोमवार की रात की तैयारी शुरू कर दी थी। पढ़ाई समाप्त होते ही लड़के शाम को एक-दो घण्टे स्कूल के आसपास की सफाई में लग जाते। गोल स्कूल और लम्बे स्कूल के गुरूजी आलों और खूँटी के सहारे ऊपर चढ़कर रोशनदान से बाहर छत पर आए। बल्ब निकाला। उनका आलों पर चढ़ना, रोशनदान से घुसना लड़कों ने मज़े से देखा था। सावधानी से उनका बल्ब निकालना और लगाना भी।

भैरा अपने साथ एक दरी और एक चादर बगल में दबाए हुए बजरंग महराज की देहरी के बाहर खड़ा हो गया। बजरंग महराज के दोनों पैर हिले। इसका अर्थ था कि भैरा के आने को उन्होंने जान लिया है। उन्होंने फिर पैर हिलाया। इस इशारे का अर्थ भैरा ने लगाया कि क्या बात है। भैरा बाहर खड़े हुए थोड़ा झुककर दरी और चादर के बण्डल को पकड़े अपने हाथों को अन्दर ले गया कि बजरंग महराज देख लें। बजरंग महराज ने फिर पैर हिलाया। इसका अर्थ भैरा ने लगाया कि पूछ रहे हैं कि यह क्या है। भैरा ने बण्डल दिखा फिर बण्डल पर अपना सिर लगा स्कूल की ओर इशारा करते हुए समझाने की कोशिश की कि स्कूल सोने जा रहा हूँ। बजरंग महराज ने ज़ोर से पैर हिलाते हुए अपना दाहिना हाथ गल्ले की पेटी पर पटका। जिससे सारे सिक्के आपस में ज़ोर से झन्न से टकराए। गल्ले की पेटी बन्द नहीं होती तो उछल कर सिक्के बाहर आ जाते। "मुँह से बोल" बजरंग महराज ने कहा।

प्रतिध्वनि की तरह शेर के दहाड़ने की आवाज़ आई। भैरा के हाथ से दरी और चादर छूटकर देहरी पर गिर गए थे। भैरा डर गया था। उसने जैसे सचमुच दहाड़ते हुए शेर के खुले मुँह को देखा था। कितने बड़े-बड़े दाँत थे। रोते हुए रुक-रुक कर भैरा ने कहा था, "मैं रात को स्कूल में सोऊँगा। वहाँ छुट्टी के दिन की पढ़ाई होगी।" बजरंग महराज ने जैसे धीरे-से पूछा था, "तूने तो स्कूल छोड़ दिया है?" शेर के दहाड़ने की ज़ोर की आवाज़ थी। ऐसा लगता था कि शेर के दहाड़ने से एक हिरण का झुँड भाग रहा है। इस तरह भाग रहा है कि दहाड़ पीछा कर रही है। और एक हिरण का बच्चा पिछड़ता जा रहा है।

"छुट्टी के दिन की पढ़ाई में सबको स्कूल जाना है। जैसे माता-पिता, दादा-दादी, नाना-नानी, शेर-बाघ, भेड़िया, भालू" यह कह ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा। स्कूल जाने के लिए भैरा बजरंग महराज का भी नाम लेना चाहता था पर जब वह बजरंग महराज कहना चाहता था तब उसके मुँह से शेर, बाघ, भेड़िया और भालू निकला। बजरंग महराज का पैर तब तक हिलता रहा जब तक भैरा रोता रहा। भैरा जब चुप हो गया तो बजरंग महराज का पैर हिलना भी बन्द हो गया। भैरा ने देहरी पर से अपना बिस्तर उठाया। खड़े रहते हुए मन ही मन स्कूल जाने की आज्ञा माँगी। तब बजरंग महराज ने पैर हिलाया था। भैरा ने सोचा कि आज्ञा मिल गई। वह खुश हो गया था। आँसू पोंछे हुए जब वह पलटा तो उसने देखा कि दुकान में एक भी ग्राहक नहीं था। टेबिल पर भजिया की प्लेटें थी। बिना पिए चाय के कप रखे थे। चाय ठण्डी हो गई थी। जब वह दुकान से बाहर निकला तो देखा चाय-भजिया बनाने वाले एक चट्टान की आड़ में खड़े थे। दूसरी चट्टान की आड़ में दो ग्राहक थे। एक ग्राहक बूढ़ा था। दूसरा चौदह-पन्द्रह साल का लड़का था। बाप बेटे होंगे।

*जारी...*